International Journal of Social Science and Education Research

ISSN Print: 2664-9845
ISSN Online: 2664-9853
Impact Factor: RJIF 8.42
IJSSER 2025; 7(2): 659-662
www.socialsciencejournals.net
Received: 20-09-2025
Accepted: 21-10-2025

मन्जू बाला
शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
आई०आई०एम०टी० विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ० अरूण कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
आई०आई०एम०टी० विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मन्जू बाला
शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
आई०आई०एम०टी० विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सरकारी एवं सरस्वती विद्या मंदिर शिक्षालयो के माध्यमिक स्तरीय कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

मन्जू बाला, अरूण कुमार

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26649845.2025.v7.i2h.418

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन में मेरठ जनपद के सरकारी और सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों में सत्र 2022दृ23 में अध्ययनरत कक्षा 10 के विद्यार्थियों को शोध जनसंख्या के रूप में लिया गया। संवेगात्मक परिपक्वता का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार, विचार, एवं भावनाओं को संतुलित रूप से व्यक्त करने की क्षमता विकसित करता है। शोध में वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया गया तथा डॉ० यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी से आँकड़े संकलित किए गए।
परिणामों से स्पष्ट हुआ कि सरकारी विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर अधिक पाया गया। कला वर्ग में 'टी' मान 6.055 तथा विज्ञान वर्ग में 2. 815 पाया गया जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। यह निष्कर्ष इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता उनके विद्यालयों के स्वरूप से प्रभावित होती है।
अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि सरस्वती विद्या मन्दिर के विद्यार्थियों की परिपक्वता अपेक्षाकृत अधिक अस्थिर है तथा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में भावनात्मक स्थिरता अधिक पाई गई। शोध के शैक्षिक निहितार्थों के अनुसार भविष्य में इस प्रकार के अध्ययन प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों पर भी किए जा सकते हैं। साथ ही, संवेगात्मक विकास के लिए परिवार एवं विद्यालय में लोकतांत्रिक एवं सहायक वातावरण का निर्माण आवश्यक है।

कूटशब्द : संवेगात्मक परिपक्वता, सरकारी विद्यालय, सरस्वती विद्या मन्दिर, माध्यमिक शिक्षा, तुलनात्मक अध्ययन, भावनात्मक विकास, सामाजिक समायोजन, शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तावना
शिक्षा का कार्य शैक्षिक प्रक्रिया को केवल पूरा करना ही नहीं है अपितु बच्चों के जीवन के अनेक पहलुओं को जानने हेतु शिक्षण निर्देश देना भी है।शिक्षा से जहां एक और बच्चों में शारीरिक मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता है वहीं दूसरी ओर बच्चों में सामाजिक भावना भी विकसित होती जाती है।इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है।सत्य तो यह है कि शिक्षा के इतने अधिक लाभ है कि उनका वर्णन करना कठिन है।शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैला है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है।

संवेग
संवेगभावया अनुभूति के अति निकट होने के कारण जब भाव की मात्रा बढ़ती है तो शरीर में उद्दीप्त होने वाली अवस्था को ही संवेग कहते हैंजैसे क्रोध, प्रेम, चिंता,ईर्ष्या जिज्ञासा आदि।

परिपक्वता
कोई व्यक्ति जैसे–जैसे परिपक्व होता जाता है उसकी संवेगात्मक स्थिरता, सामाजिक समायोजन, व्यावसायिक अभिरूचि तथा जीवन की आकांक्षायें भी विकसित होती जाती है। सार्टोन तथा उनके सहयोगियों के अनुसार जीव में विकास तथा गर्दन का पूरा होना परिपक्वता कहलाता है। एक परिपक्व व्यक्ति स्वतंत्रता का आनन्द उठाता है जो कि अपरिपक्व व्यक्ति को उपलब्ध नहीं होता।

अपरिपक्व व्यक्ति को अधिकतर बड़े लोगों के नियंत्रण में रहना पड़ता है।परिपक्वता निम्नांकित प्रकार की होती है–

- **शारीरिक परिपक्वता**–शारीरिक परिपक्वता एक क्रमिक प्रक्रिया है। पर्याप्त शारीरिक विकास होने में वर्षों लगते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि शारीरिक परिपक्वता के साथ–साथ सामाजिक संवेगात्मक, मानसिक एवं नैतिक परिपक्वता ही होगी।
- **सामाजिक परिपक्वता**–सामाजिक रूप से परिपक्व व्यक्ति अपनी आलोचनाओं पर ध्यान देकर उसके अनुसार स्वयं को सुधारने का प्रयास करता है। वह कार्यों को स्वयं अपने उत्तरदायित्व पर करना चाहता है।नैतिक परिपक्वता नैतिक रूप से परिपक्व व्यक्ति उचित सिद्धान्तों का पालन करता है। वह सहनशील होता है। और उसे मानवीय कमजोरियों का भलीभाँति ज्ञान होता है।
- **मानसिक परिपक्वता**–मानसिक परिपक्वता से तात्पर्य परिपक्व चिन्तन से है। जोनिम्न व्यवहारों का प्रदर्शन करती है–निर्णय करने की स्वतंत्र क्षमता, अपने उत्तरदायित्व का अच्छे या बुरे की भावना के बिना निर्वाह करना, संवेगों से दूर रहकर किसी परिस्थिति में केवल गुण या दोष के आधार पर विचार करना, नम्र बने रहना, उत्साह में परिणाम को न भूलना आदि।

संवेगात्मक परिपक्वता

संवेगात्मक परिपक्वता एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तित्त्व अन्तर्मन एवं अन्तःव्यक्ति दोनों प्रकार के संवेगात्मक स्वास्थ्य प्रयत्नशील रहते हैं।यदि एक व्यक्ति का संवेगात्मक विकास पूर्ण रूप से होता है तो उसकी ग्रहण करने की क्षमता भी अधिक होती है। तथा उसकी दमनकारी प्रवृत्तियाँ कम होती हैं। और साथ ही साथ चोट खाने की प्रवृत्ति भी कम होगी। परिपक्वता का संवेगात्मक विकास पर अधिक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक उद्दीपक प्रमुख रूप से संवेगात्मक विकास के कारण होते हैं। पर्यावरण के ज्ञान में वृद्धि तथा सामाजिक विकास एवं शारीरिक नियंत्रण के कारण बालक अपनी संवेगात्मक इच्छाओं को प्रकट करने में सफलता प्राप्त करता है।

सरकारी विद्यालय

सरकारी शिक्षालयो उन विद्यालयों को कहते हैं जो पूर्णतः सरकारी अनुदान पर निर्भर होते हैं। प्रस्तुत शोध में 10वीं कक्षा तक के षिक्षार्थीयो को लिया गया है।

सरस्वती विद्या मन्दिरः–

प्रस्तुत अध्ययन में सरस्वती विद्या मन्दिर से तात्पर्य विद्या भारती नामक अखिल भारतीय संस्था से है जिसके द्वारा 12वीं कक्षा तक की शिक्षा को संचालित करने वाले शिक्षालयो में चलाये जाते हैं।

माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थी

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तरीय शिक्षार्थीयो से तात्पर्य उन षिक्षार्थीयो से है जो सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों में सत्र 2022–23 में 10वीं कक्षा में अध्ययन कर रहे हैं।

शोध के उद्देश्य

- सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय कला वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विज्ञान वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक्र परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

- सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय कला वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विज्ञान वर्ग के शिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य

ऐरिक और राबर्ट (1988)–इन्होने सामान्य छात्रों के संवेगात्मक विकास और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बालक–बालिकाओं की सफलता और असफलता की परिकल्पनाओं का अध्ययन कर पाया कि सफलता और असफलता आंतरिक व बाह्य कारणों पर निर्धारित होती है। तथा दूसरा कारण सफलता, असफलता, क्षमता और प्रयत्नों पर निर्धारित होती है।

तिवारी, राजेश (1996) ने व्यक्तित्व समायोजन में सामाजिक समूह और उनके बुद्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया जिसमें निष्कर्ष पाया कि विभिन्न वर्गों एवं बुद्धि प्राप्तांक में सार्थक अंतर पाया गया। तथा बालक एवं बालिकाओं के बुद्धि प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्य वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग में समायोजन क्षमता अधिक पायी गयी।

Nago Roo M Palwade June 2009 ने अपने अध्ययन में, स्थापना की थी कि संज्ञानात्मकसिद्धान्त के अनुसार हमारे अपने विचारों से ही भाव या आवेश उत्पन्न होता है यदि हम उन विचारों को लिखते हैं और सोचते हैं कि क्या ये विचार ठीक है या गलत और हमारे आवेश में आने के पीछे के कारणों का विश्लेषण कर पाते हैं तो हमारे आवेश कम हो जाते हैं। इससे लगता है कि जो भी तार्किकता से विचारों को परखता है उसके आवेश में आने की संभावना कम हो जाती है। हम जब अपने विचारों को अपने परिवार और दोस्तों के साथ साझा करते हैं तो हम अपने आप को अधिक सुरक्षित पाते हैं। भावात्मक परिपक्वता किसी आयु, काम, लिंग या वैवाहिक जीवन, धनदौलत के आने से या बच्चे होने से नहीं आती है। भावात्मक परिपक्वता व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है हम कितना परिपक्व होना चाहते हैं यह हमारी इच्छा पर निर्भर करता है। किशोरावस्था में बच्चे अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं, उन्हें दूसरों से शिकायत होती है यहां तक कि जीवन में सकारात्मक ढूंढ़ने में दिक्कत आती है। इस अध्ययन में किशोरावस्था में बच्चों के तनाव, चिन्ता और समस्याओं को लेकर शोध प्रस्तुत किया गया। शोधकर्ता के द्वारा किशोरावस्था को दो समूह लड़के और लड़कियों में बांटकर शोध कार्य किया गया है। दोनों समूहों को भी आर्थिक और सामाजिक स्तर को दृष्टि में रखते हुए इसके सम्बंध को देखा गया है।इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने घर के वातावरण और भावात्मक परिपक्वता के सम्बंध का अध्ययन प्रस्तुत किया है। शोधकर्ता के द्वारा इस शोध को कॉलेज में पढ़ रहे बच्चों के साथ किया गया। इसमें भी शोधकर्ता ने हिन्दू और अन्य धर्म के बालक और बालिकाओं के बीच, विज्ञान और कला सार्ग के छात्रों में, निजी और सरकारी कॉलेज में पढ़ रहे विद्यार्थी के बीच घर के वातावरण और भावात्मक परिवक्वता के मध्य सम्बंध पर शोध कार्य किया है। इसके साथ ही पृथक–पृथक प्रवृत्ति के छात्रो में भावात्मक परिपक्वता और भावात्मक समता के बीच सम्बंध का भी मूल्यांकन प्रस्तुत हुआ है।

Maheshwari, Arun, Gujral, Harminder kaur, Vol-9, October-Dec 2021ने इमोशनल स्टेबिलिटी एण्ड सोशियो पर्सनल फैक्टर का अध्ययन किया। इसका उद्देश्य था। (1) अभिभावकों की शिक्षा और बच्चों के संवेगात्मक स्थिरता के मध्य सम्बन्ध बनाना। (2) अभिभावकों के व्यवसाय तथा बच्चों के संवेगात्मक स्थायित्व के मध्य सम्बन्ध को निर्धारित करना। (3) परिवारों के आकार और उनके प्रकार तथा बच्चों की संवेगात्मक स्थिरता के मध्य सम्बन्धों

को निर्धारित करना। इस शोध के प्रमुख निष्कर्ष थे (1) जिन बच्चों के द्वारा ऊंची सौगात्मक स्थायित्व को दर्शाया गया उन बच्चों की माताओं द्वारा परास्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की थी। जबकि निम्न संवेगात्मक स्थिरता को प्रदर्शित करने वाले बच्चों की अधिकांश प्रतिशत माताओं ने हाईस्कूल से कम शिक्षा प्राप्त की थी। (2) संवेगात्मक स्थिरता और माताओं के कार्य में सार्थक साहचर्य नहीं पाया गया। उच्च संवेगात्मक स्थिरता वाले समूह की माताएं कुशल गृहणी थी। जबकि कम संवेगात्मक स्थिरता वाले समूह की माताएं विशेष कार्य करती थी। (3) उच्च संवेगात्मक स्थायित्व को प्रदर्शित करने वाले समूह संयुक्त परिवारों से सम्बन्धित थे और निम्न संवेगात्मक स्थिरता वाले एकल परिवारों से सम्बन्धित थे।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद मेरठ के सरकारी शिक्षालयो व सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों में सत्र 2022–2023 में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी जनसंख्या के अन्तर्गत लिये गए है।

तालिका संख्या 1: सरकारी एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय कला वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी का मान

शिक्षालयो का स्वरूप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश	T
सरकारी शिक्षालयो (कला वर्ग)	50	73.3	14.44		6.
सरस्वती विद्या मन्दिर (कला वर्ग)	50	95.5	21.00	98	055

T0.05

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि सरकारी शिक्षालयो के माध्यमिक स्तरीय कला वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान इन षिक्षार्थीयो के अत्यधिक स्थायी संवेगात्मक परिपक्व होने का द्योतक है। सरस्वती विद्या मन्दिर के कला वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान इन षिक्षार्थीयो के अस्थायी संवेगात्मक परिपक्व होने का द्योतक है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि सरकारी शिक्षालयो की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय कला वर्ग के संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों में अधिक असमानता है।

सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य टी मान 6.055 पाया गया। यह मान टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता उनके विद्यालयों के स्वरूप से प्रभावित होती है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय कला वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता अधिक होती है।

तालिका संख्या 2: सरकारी एवं सरस्वती विद्या मन्दिर विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विज्ञान वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी का मान

विद्यालयों का स्वरूप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता का अंश	T
सरकारी विद्यालयों (विज्ञान वर्ग)	50	82.7	16.05		2.
सरस्वती विद्या मन्दिर (विज्ञान वर्ग)	50	95.2	27.08	98	815

T0.05

उपरोक्त तालिका से विदित होता है कि सरकारी विद्यालयों के माध्यमिक स्तरीय विज्ञान वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान इन षिक्षार्थीयो के अत्यधिक स्थायी संवेगात्मक परिपक्व होने का द्योतक है। सरस्वती विद्या मन्दिर के विज्ञान वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान इन षिक्षार्थीयो के अस्थायी संवेगात्मक परिपक्व होने का द्योतक है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय विज्ञान वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों में अधिक असमानता है।

सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य टी मान 2.815 पाया गया। यह मान टी मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। अतः षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता उनके विद्यालयों के स्वरूप से प्रभावित होती है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयोंकी तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय विज्ञान वर्ग के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता अधिक होती है।

निष्कर्ष

डॉ० यशवीर सिंह तथा महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी उपकरण का प्रयोग करके संग्रहित किये गये। आँकडों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर व्याख्या की गयी। अतः प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

- सरकारी विद्यालयों की तुलना में सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता अस्थायी श्रेणी की पाई गयी।
- सरकारी विद्यालयों एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता अस्थायी श्रेणी की पायी गयी। तथा सरस्वती विद्या मन्दिर के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता अस्थायी श्रेणी की थी। सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा सरस्वती विद्या मन्दिर के माध्यमिक स्तरीय छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता के प्राप्तांकों में अधिक असमानता थी।

शैक्षिक निहितार्थ

- प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले षिक्षार्थीयो पर किया गया है। इसे प्राथमिक स्तर के षिक्षार्थीयो पर भी किया जा सकता है।
- इस शोध को जूनियर हाई स्कूल के षिक्षार्थीयो पर भी किया जा सकता है।
- चूँकि बच्चों के माता–पिता के शैक्षिक स्तरों द्वारा भी सांवेगिक परिपक्वता प्रभावित होती है। अतः माता–पिता के शैक्षिक स्तर को भी इस स्तर के अन्तर्गत रखा जा सकता है।
- यह लघुशोध माध्यमिक स्तर के षिक्षार्थीयो पर किया गया है। इसे स्नातक, स्नातकोत्तर तथा बी०एड०, एम०एड० स्तर के षिक्षार्थीयो पर भी किया जा सकता है।
- सह शिक्षा एवं बिना सहशिक्षा वाले विद्यालयों के षिक्षार्थीयो की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- किशोरों को संवेगात्मक विकास हेतु सरकारी तथा घर पर लोकतन्त्रीय वातावरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- किशोरों के व्यक्तित्व की विशेषताओं का सम्मान रखना चाहिए तथा उन्हें किये गये कार्यों के लिये प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान करने चाहिए।

संदर्भ

1. राय, पी० एन०. अनुसंधान परिचय, आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल (2007)
2. सिंह ए०के०. मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियों, दिल्ली मोती लाल बनारसी दास (2009)
3. शर्मा, आर० ए०. शिक्षा अनुसंधान, मेरठ आर० लाल बुक डिपो (2007)
4. गुप्ता एवं गुप्ता. शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन (2008)
5. कोल एल०. शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, नई दिल्लीविकास पब्लिशिंग हाउसप्रा० लि० (2007)
6. सिंह ए० के०. शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन (2009)
7. कपिल एच० के० सांख्यिकीय के मूल तत्त्व, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन्स (2008)
8. मिश्रा, वीणा (1982), किशोर छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबंध, अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद, पृ. 6.।
9. ऐरिक और राबर्ट (1988), श्सामान्य छात्रों के संवेगात्मक विकास और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बालक–बालिकाओं की सफलता और असफलता की परिकल्पनाओं का अध्ययन. www-corporatetrainingmaterials-com26-02-2015, pm.
10. तिवारी, राजेश (1996), ए स्टडी ऑफ द पर्सनॉलिटी एडजस्टमेंट इन रिलेशन टू सोशल ग्रुप एण्ड देयर इन्टेलीजेन्स, पूर्वांचल जर्नल ऑफ एजुकेशन स्टडीज, वैल्यूम–6, पृ. 5–8.।
11. Nago Roo M. Palwade. A comparative study of emotional maturity and youth problems of male and female belonging to higher, middle and lower class. Dr. Babasaheb Ambedkar Marathawade University, Aurangabad; June 2009.
12. Meheshwari, Arun, Gujral, Harminder Kaur. Emotional stability: A study of contributory factors, The International Journal of India Psychology. 2021 Oct-Dec; Vol-9.